अंधेरी जिंदगी में उजाला लाने की कोशिश

एनआरआई दो युवतियां कर रही है बीएसएफ, सीआरपीएफ के अधिकारियों की विधवाओं की जिंदगी में रंग भरने का प्रयास।

भास्कर न्यूज | कुरुक्षेत्र

आज के दौर में जब खून के रिश्ते भी पानी हो गए हैं और हर कोई सुविधाभोगी जीवन जीने के लिए पैसा जुटाने की फिराक में है, ऐसे में एनआरआई दो युवतियों ने उन लोगों की जिंदगी को रोशन करने की ठानी है, जहां अंधेरा भी दस्तक देने से पहले कई बार सोचता है।

आरपीएफ, बीएसएफ और सीआरपीएफ के जवानों की विधवाओं व उनके बच्चों को नवजीवन देने के लिए यूएसए से आई एप्रिल व फिनलेंड की माया आजकल शिद्दत से इस मुहिम के लिए काम कर रही हैं। निशान संस्था के निदेशक अरिदमन जीत सिंह के सहयोग से इस मिशन में जुटी विदेशी बालाएं उन महिलाओं व बच्चों से संपर्क साध रही हैं, जिनके पति व पिता इस दुनिया में नहीं हैं।

कुरुक्षेत्र के सेक्टर दो के कार्यालय में अप्रिल व माया ने दैनिक भास्कर के समक्ष इस बात का खुलासा किया कि पूरे देश में आरपीएफ, बीएसएफ, सीआरपीएफ से हर बरस 700-800 अधिकारियों व जवानों की मौत हो जाती है, जिसके चलते उनके परिजनों का जीवन पूरी तरह बदल जाता है, उन्हें बहुत कम पेंशन दी जाती है और उनकी औरतों पर दूसरे लोग नजरें गढाए रहते हैं।

यही नहीं उनके बच्चों को मांगलिक समारोह में इसलिए शामिल नहीं किया जाता, क्योंकि उनकी मां के सिर से पति का साया उठ चुका है। वैसे तो सीआरपीएफ व बीएसएफ जैसे बल आर्मर्ड फोर्स का दर्जा पाए हुए हैं, लेकिन इनके जवानों को रिटायरमेंट व शहीदी पर अपने हक के लिए धक्के खाने पड़ते हैं।

...ताकि उनकी ओर भी दें ध्यान

निशान संस्था के निदेशक व पूर्व बीएसएफ अधिकारी अरिदमन जीत सिंह कहते हैं कि हम अपनी संस्था के माध्यम से इस प्रयास में हैं कि नीति निर्धारक उन परिजनों की जिंदगी में भी झांके, असल में आज भ्रष्टाचार इतना हावी हो चुका है कि कोई किसी के बारे में नहीं सोचता, एक फाइल को आगे बढ़ाने के लिए ऊपरी स्तर तक कमिशन तय हैं, यह पीड़ा अधिकारियों की विधवाओ को भी झेलनी पड़ रही है। वे भी बेहतर जीवन जिएं, सरकार उन्हें मिलने वाली सुविधाओं तत्परता से मुहैया कराएं, क्योंकि इन्हें पाने के लिए खासी जद्दोजहद करनी पड़ती है।

नीति निर्धारकों व आला अधिकारियों को लिखे जा रहे हैं पत्र : सन 2006 से निशान संस्था के अरिदमन जीत सिंह के साथ मिलकर काम कर रही विदेशी मूल की अप्रिल व फिनलेंड आजकल नीति निर्धारकों व आला अधिकारियों को पत्र लिखकर उनकी दशा बता रही है। नागालैंड, पंजाब पुलिस, पश्चिमी बंगाल, तमिलनाडू पुलिस से भी उन्होंने उनके हालात का वर्णन कर उन्हें सुरक्षा देने की बात कही है। इसके अलावा अब वे प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति व संबंधित मंत्रालयों को भी इन हालातों से वाकिफ करा रहे हैं। बकौल अप्रिल, हमने कई दिन बीएसएफ अधिकारियों की विधवा व बच्चों के साथ गुजारे हैं, उनके हालात जाने हैं, और अब इस देश के हर राज्य व जिले में हमारी संस्था के लोग काम कर रहे हैं। वे हमें लगातार सूचनाएं दे रहे हैं, इंटरनेट के माध्यम से ये सूचनाएं हम तक पहुंचती हैं।